बाप समान बनने के लिए
ब्रह्मा बाप समान पूरा निश्चयबुद्धि बनो

–ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी

अभी-अभी हम सबने गीत सुना (दिल का अब संकल्प यही है, बाबा तुम-सा बनना ही है...), हम सब के दिल की आवाज़ बाबा के प्रति थी। **बाबा को हम सबने दिल से कहा कि बाबा, हमें आप जैसा बनना ही है। बनना ही है** – यही आवाज़ है ना हम सबकी या बनेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, पता नहीं बन सकेंगे या नहीं बन सकेंगे, ऐसा तो नहीं? जिसमें दृढ़ता है, वो बनेंगे ज़रूर क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। बाबा ने हम सबको ऐसी चाबी दी है, भले उसे जादू की चाबी कहो। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही। लेकिन मन में जरा भी, सूक्ष्म भी संकल्प नहीं हो कि पता नहीं, होगा या नहीं होगा, करता तो हूँ लेकिन देखेंगे क्या होता है। अगर अपने ही मन में यह संकल्प उठता है ना तो बाबा कहते हैं कि यह भी स्वयं के प्रति संशय है। बाप के प्रति संशय और चीज़ है लेकिन यह स्वयं के प्रति ही संशय है कि पता नहीं क्या होगा, होगा या नहीं होगा। संशयबुद्धि के लिए क्या कहा हुआ है? विजयन्ति या विनश्यन्ति? स्वयं में ही संशय है, चलो संकल्प मात्र में ही है लेकिन संशय है तो सही। संशयबुद्धि कभी विजयन्ति हो ही नहीं सकता चाहे संशय स्वयं में है, ड्रामा में है, बाबा में है या ब्राह्मण परिवार में है। संशय नहीं होना चाहिए क्योंकि जहाँ संशय है वहाँ विजयी बन ही नहीं सकेंगे। इसीलिए हम सबका दृढ़ संकल्प है कि बाबा, हमको आपके समान बनना ही है।

बाबा ने हमको यह भी कहा है कि तुम बच्चों को यह स्मृति आनी चाहिए कि हम कितनी बार विजयी बने हैं! आपको याद है कितनी बार बने हैं? अनगिनत बार। जो अनगिनत बार बना है, वो अपने में संशय कैसे ला सकता है? हमको यह रूहानी नशा होना चाहिए, देह-अभिमान का नहीं। हम ही कल्प पहले बने थे, इस कल्प भी बन रहे हैं और हर कल्प हम ही बनेंगे– यह निश्चय अटल होना चाहिए। अटल निश्चय तब होगा जब मन में स्वयं के प्रति या किसी के प्रति संशय नहीं। 'पता नहीं' शब्द आया माना संशय की मात्रा है। बाबा ने एक बार कहा था कि पता नहीं, पता नहीं कहते हो तो इस ब्राह्मण परिवार का जो झाड़ है, उससे आपका पत्ता कट जायेगा। पता नहीं है तो पत्ता कटेगा ना! इसीलिए यह संकल्प भी मन में नहीं आना चाहिए। निश्चय माना निश्चय।

आज मुरली में बाबा ने साक्षात्कार मूर्त की पाइंट बतायी। साक्षात्कार मूर्त तब बनेंगे जब साक्षात् बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? बाबा को (ब्रह्मा बाबा को) बाबा ने (शिव बाबा ने) टच किया और बाबा ने (ब्रह्मा बाबा ने) उस संकल्प में थोड़ा भी संशय लाया कि क्या होगा, कैसे होगा, मैं सब-कुछ छोड़ तो दूँ लेकिन आगे स्थापना कर सकूँगा या नहीं कर सकूँगा? नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। यह बात किसी ने कही है? अभी तक भी इतने साधु, सन्त, महात्मा, मंडलेश्वर जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते हैं कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे। यह हो ही नहीं सकता– वे ये शब्द बोलते हैं लेकिन हम क्या बोलते हैं? आप भी प्रवृत्ति में रहते हैं ना! आपका दिल क्या कहता है? आग और कपास है ना! लेकिन आप लोगों में अपवित्रता की आग नहीं लगती है ना! नयी बात है ना यह! झगड़ा जब शुरू हुआ, वो किससे हुआ? इससे ही ना!

मुझे याद है, यहाँ मधुबन में महामंडलेश्वरों का स्नेह मिलन रखा था। उसमें हरिद्वार से 15-16 महामंडलेश्वर आये थे। उनमें से एक महामंडलेश्वर दादी जी से मिल रहे थे। दादी जी तो साक्षात्कार मूर्त थीं ही। दादी जी से मिलते ही उन्हों को लगा

कि यह एक नारी, इतना बड़ा कार्य कर रही है! हम इतने समय से कार्य कर रहे हैं लेकिन अभी तक हमने अपने जैसा किसी को बनाया ही नहीं। वे अपने भक्त या शिष्यों से कहेंगे क्या कि पवित्र बनो? गुरुओं की पालना तो गृहस्थी ही करते हैं ना! अगर सब गृहस्थी संन्यासी हो जायें तो उनका गुजारा कैसे होगा? कहाँ से होगा? इसलिए वे कह ही नहीं सकते कि पवित्र बनो। लेकिन जब ब्रह्मा बाबा को आज्ञा मिली, डायरेक्शन मिला कि पवित्र बन तुमको पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है, क्या बाबा को संशय आया कि होगा या नहीं होगा? यह तो नयी बात है, क्या होगा, कैसे होगा? पवित्रता के लिए उस समय इतने झगड़े हुए, बात मत पूछो। मुझे याद है, शुरू-शुरू में सिन्ध-हैदराबाद में बहुत हंगामा हुआ। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और यह बात उनसे कह भी नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इसका फाउण्डेशन ही यह है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे? मैं यह नहीं कह सकता हूँ। उन्होंने कहा कि इन माता-कन्याओं को मार पड़ेगी, बन्धन पड़ेंगे, आपके खिलाफ विरोध होगा। बाबा ने कहा कि मेरे को शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। इतनी हिम्मत चाहिए ना!

बाबा को जरा भी संशय आया? बाबा इतना बड़ा जवाहरी था। कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा? मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? मेरा इतना बड़ा परिवार है, सब-कुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ सोचा? नहीं। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसे ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्जाम्पल है। आपको पता है, आपके सामने आदर्श हैं कि ब्रह्माकुमार-कुमारी बनेंगे तो क्या-क्या करना पड़ेगा, कैसे करना पड़ेगा। आपके आगे उनका एग्जाम्पल है ना, जिन्होंने आपसे पहले ही पवित्र गृहस्थ जीवन अपनाया है। उनको देखकर आपने निर्णय लिया कि हमें भी ऐसे रहना है, ऐसे करना है। बाबा के आगे कोई दृष्टान्त, एग्जाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। इस विषय में बाबा को संशय आया? **संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं, बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना।** तभी हम साक्षात्कार मूर्त बन सकते हैं।

बाबा समान बनने के लिए पहला फाउण्डेशन है निश्चयबुद्धि। अपने आपसे पूछो, हम बाप समान निश्चयबुद्धि हैं? सिर्फ बाबा में निश्चय नहीं। बाबा से हमारा प्यार बहुत है। बाबा के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार हैं। बाबा कुछ भी कहें, हम कर लेंगे। लेकिन बाबा कहते हैं कि कोई भी चीज़ अगर हिलती है तो आप चारों तरफ से बिल्कुल टाइट करेंगे ताकि हिले नहीं। हिलेगी नहीं तो टूटेगी नहीं। इसी रीति से **बाप समान बनना है तो आपको भी चारों तरफ का निश्चय चाहिए।** पहला निश्चय है, बाबा में निश्चय। दूसरा है, ड्रामा में निश्चय। संगठन में जब कर्म और सम्बन्ध में आते हैं तो जो समस्यायें आती हैं, उन समस्याओं में थोड़ा हिलते हैं। थोड़ी हलचल होती है। अगर ड्रामा में यह निश्चय है कि ड्रामा में जो होता है, मेरे कल्याण के लिए तो यह बहुत बड़ी बात है। समझो, आपका दिवाला निकल गया। फिर भी सोचो कि ड्रामा में मेरा कल्याण है। यह कोई छोटी बात नहीं है? देख रहे हो, दिवाला निकला है और आप कहो, ड्रामा में कल्याण है। हो सकता है? ड्रामा में संशय तो आ सकता है ना! लेकिन ड्रामा में भी पूरा निश्चय हो। अच्छा, कुछ भी हुआ, हिसाब-किताब हमारा ऊपर-नीचे पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार हुआ। वो तो ज़रूर चुक्तू होगा ना! कई लोग कहते हैं कि बहन जी, मैं इतने समय तक कभी बीमार नहीं हुआ, सिरदर्द तक मुझे नहीं आया लेकिन ज्ञान में आने के बाद मैं बहुत बीमार पड़ता हूँ। पता नहीं क्या है। यह क्या हुआ? निश्चय हुआ या संशय? ड्रामा में कई प्रकार की समस्यायें आती हैं। मज़बूरियाँ आती हैं। उस मज़बूरी के समय निश्चय पक्का हो।

हम कहते हैं कि हमारे में निश्चय है। ठीक है लेकिन आप में निश्चय है या नहीं, कैसे पता पड़े? कोई हिलाकर देखे तभी तो पता पड़ेगा ना! समस्यायें या परिस्थितियाँ हैं हमारे निश्चय की परीक्षा लेने वाले पेपर्स। इसलिए ड्रामा में भी पूरा निश्चय चाहिए। तीसरा, ब्राह्मण परिवार में भी निश्चय होना चाहिए। कई भाई ऐसे कहते हैं कि बाबा तो ठीक है लेकिन ब्राह्मण परिवार में बहुत खिटपिट है। कोई कैसा, कोई कैसा है। परीक्षा ब्राह्मण परिवार के संगठन में ही होती है। उसमें भी निश्चय हो कि मुझे ब्राह्मण परिवार से देवता परिवार में जाना है। ब्राह्मण परिवार के बिना आप वहाँ अकेले राजधानी में आयेंगे क्या? अकेले राजा बनकर रहोगे? प्रजा होवे ही नहीं। रॉयल फेमिली होवे ही नहीं। दैवी परिवार के बिगर आप देवता कैसे बनेंगे और प्रजा बगैर राजा कैसे बनेंगे? राजधानी में सब चाहिएँ ना! बाबा ने कह दिया है कि ब्राह्मण परिवार में सभी के संस्कार अलग-अलग होंगे।

इसकी यादगार माला देखी है ना! माला में पहले नम्बर और लास्ट नम्बर वाले में क्यों फरक हुआ? एक सौ आठ में पहले नम्बर वाले में और एक सौ आठवें लास्ट नम्बर वाले में कोई फरक तो होगा तब तो एक फर्स्ट में आया दूसरा लास्ट में आया। क्या फरक होगा? अवस्था और धारणाओं में। तभी तो एक, एक सौ आठवाँ बना, दूसरा पहला बना। संस्कार तो भिन्न-भिन्न होंगे। राजधानी स्थापन होनी है। सब सम्पूर्ण हो जायें, सब एक समान हो जायें फिर तो सतयुग में कोई प्रजा नहीं होगी, सभी राजा ही राजा होंगे। ऐसी राजधानी होती है क्या? नहीं होती है ना! बाबा इसीलिए कहता है कि नम्बरवार, यथाशक्ति। बाबा कहता है कि संस्कार चाहे भिन्न-भिन्न हों लेकिन तुम नॉलेजफुल होकर, उन संस्कारों का अपने मन पर प्रभाव न पड़ने दो।

मानो, आपके सेन्टर पर ही आने वालों में कोई क्रोधी है, कोई लोभी है, कोई अभिमान वाला है। नम्बरवार तो होंगे ही ना! हम कहें कि क्या ये ब्राह्मण हैं, ब्राह्मण परिवार के हैं, ब्राह्मण होकर इतना अभिमान! ब्राह्मण में क्रोध! ये ब्राह्मण ही नहीं हैं। उनके लिए मन में घृणा आ जायेगी। यह तो ब्राह्मण परिवार में निश्चय नहीं हुआ ना? इसका अर्थ है, आपको ब्राह्मण परिवार के संगठन में चलने की विधि नहीं आती। फिर कहते हैं, यह ऐसा है ना, इसके कारण मेरी अवस्था खराब होती है। मैं ठीक रहता हूँ लेकिन मुझे ऐसा साथी मिला है, क्लास का ऐसा स्टूडेण्ड मिला है, वही निमित्त बनता है मेरी अवस्था गिराने के लिए। पॉवरफुल तो वो हुआ ना, जो आपकी अवस्था को गिरा दिया! आप तो कमज़ोर हुए, उसने आपको हिला दिया। यह संशय है या निश्चय है ब्राह्मण परिवार के प्रति? यह तो होगा ही। बाबा ने कहा है कि यह झाड़ है। वैराइटी झाड़ है। झाड़ में सिर्फ तना ही तना हो तो क्या वह अच्छा लगेगा? झाड़ माना उसमें शाखायें होंगी, टाल-टालियाँ होंगी, पत्ते होंगे, फूल होंगे, फल होंगे, सब होंगे ना! तभी तो वह अच्छा लगेगा। यह भी तो कल्पवृक्ष है ना, मानववंश वृक्ष, जिसका राज़ बाबा ने समझाया है!

कई भाई-बहनें कहते हैं कि मैं तो किसी को दु:ख नहीं देता। मेरा नेचर बहुत शान्त है लेकिन यह मुझे बहुत दु:ख देता है, यह मुझे नीचे गिराता है। कोई न कोई बात ऐसी करता है जिससे मेरे आगे पेपर आता है और मैं फेल हो जाता हूँ। देखो, ये शब्द कहने में अच्छे लगते हैं? पेपर लिया उसने और फेल हुए आप। कमज़ोर तो आप हुए ना! यहाँ एक प्रश्न है। ठीक है, उसने दु:ख दिया। दु:ख देना अच्छा नहीं है, फिर भी उसने दिया तो बाबा जाने, उसका हिसाब-किताब जाने। हमको बाबा ने जज तो नहीं बनाया कि तुम जज बन करके दूसरों को चेक करो। यह अधिकार बाबा ने किसी को नहीं दिया। बाबा कहता है कि अगर जज बनना ही है तो अपना जज बनो, दूसरों का जज मैं बैठा हूँ। बाबा ने किसको जज बनाया नहीं है। सुप्रीम जज तो बाबा है ना! इसीलिए मैं आपसे पूछती हूँ कि दु:ख देने वाला और दु:ख लेने वाला एक ही होता है या दो होते हैं? दो होते हैं ना! देने वाला अलग होता है और लेने वाला अलग होता है। उसने तो आपको दु:ख दिया लेकिन लेने वाले कौन? आप ना! तो आपने लिया क्यों? ग़लती किसकी हुई? देने वाले की या लेने वाले की? उसने दु:ख दिया या आपने दु:ख लिया? तो उसके ऊपर दोष क्यों रखते हैं?

देखो, ऐसा होता है कि हरेक के पीछे उसका पेपर लेने वाला कोई न कोई होता ही है। कहाँ परिवार में होगा, कहाँ दफ़्तर में होगा या कहाँ सेन्टर पर होगा। कहीं न कहीं आपके पीछे पेपर लेने वाला ज़रूर एक होगा। कोई न कोई निमित्त बनता है। लेकिन हमको पेपर पर ध्यान देना है या उस भाई अथवा बहन पर ध्यान देना है? आप स्कूल या कॉलेज में परीक्षा देने जाते हो। क्वेश्चन पेपर देखकर यह कहो कि उसको निकालने वाले ने पता नहीं किस मूड में रहकर प्रश्न निकाला है! शायद घर में पत्नी से झगड़ा करके निकाला होगा। पेपर लिखने के बदले अगर आप ऐसे सोचने बैठेंगे तो परीक्षा में पास होंगे? समय पूरा हो जायेगा और आपको क्या मिलेगा? गोल-गोल, ज़ीरो! वह ठीक होगा? इसीलिए कभी भी दूसरे के ऊपर दोष नहीं रखो। हमको बदलना है। हमारा स्लोगन क्या है? 'बदला न लो, बदल करके दिखाओ।' यह बहुत अच्छा धारणा का स्लोगन है। लोग बदला लेने में बहुत होशियार हो जाते हैं लेकिन अपने को बदलने में ढीले हो जाते हैं। इसलिए उनका पुरुषार्थ, पुरुषार्थ ही रह जाता है, तीव्र पुरुषार्थ नहीं होता। ज्ञान को छोड़ेंगे नहीं, बाबा को छोड़ेंगे नहीं, मुरली सुनना छोड़ेंगे नहीं लेकिन ऊँचा भी उठेंगे नहीं। जैसे हैं, वैसे अमर-अविनाशी। बस एक रफ़्तार में चले आ रहे हैं आराम से। लेकिन इससे मिलेगा क्या? प्राप्ति क्या होगी? तो ऐसा भी नहीं होना चाहिए ना! बाबा ने किसी को देखा कि यह ऐसा करता है, वह वैसा करता है? जब आप बाबा के पास आये, बाबा के बने तब आप में विकार नहीं थे क्या? पाप कर्म नहीं थे क्या? थे ना! बाबा ने आपके विकारों को देखा या आप आत्मा कल्प पहले वाली हैं, वो देखा? बाबा ने आपकी बुराई देखी? अच्छाई ही देखी, बुराई देखी ही नहीं। अच्छाई से बुराई आपे ही दब गयी। अगर बाबा आपमें बुराई देखता तो आप एक भी बाबा के बच्चे नहीं बन सकते थे। सब विकारी थे, एक जन्म के नहीं, त्रेसठ जन्मों के विकारी थे। जब बाबा ने नहीं देखा तो हम क्यों देखें कि इसमें विकार हैं, इसमें कमी-कमज़ोरी है?

मुझे याद है, हम छोटे थे ना, मम्मा हमारी पालना करती थी। बाबा तो अलग रहता था। मम्मा बहुत ध्यान से हमारी पालना करती थी। रात्रि को कचहरी करती थी, पूछती थी कि किसी ने बुरा कार्य किया? किसी ने देखा? शिक्षा देती थी आगे बढ़ाने के लिए। जब कचहरी लगती थी तो बात निकलती थी कि फलानी ने ऐसा किया जो हमें अच्छा नहीं लगा। हमें फलानी ने ऐसा-ऐसा बोल दिया, बहुत इनसल्ट की। ऐसा किया, वैसा किया। मम्मा हमको एक मिसाल देती थी। कहती थी कि जब आप उसकी बुराई देखेंगे ना, तो आपको उस आत्मा के लिए हमेशा घृणा होगी, प्यार कभी नहीं होगा क्योंकि आपने उसकी कमी या बुराई देखी ना! उसको देखते ही आपके मन में आयेगा कि यह है ही ऐसी, यह तो करेगी ही ऐसा, यह बोलेगी ही ऐसा। तो मम्मा हमें कहती थी कि समझो, यह अपनी बुराई छोड़ रही है। ज्ञान में आना माना अपनी बुराई छोड़ना। वो अपनी बुराई छोड़ रही है और आप उसकी बुराई ले रही हो, क्या यह अक्ल का काम है? क्या यह समझदारी है? मम्मा मिसाल देकर कहती थी, कैसे अपने में घृणा लाओ। मानो, कोई गटर में गंदा पानी बह रहा है और उस गंदे पानी को आप पी रहे हो। क्या यह अक्ल का काम है? बुराई माना गटर का पानी है ना! वो गंदा पानी छोड़ रही है और आप उसकी बुराई लेकर के चल रहे हैं। जब मम्मा ऐसे मिसाल देती थी ना गटर के पानी का, तो हमारे सामने वो दृश्य आता था। सचमुच हमें घृणा आती थी कि क्या हम गटर का पानी पी रहे हैं! यह क्या! हम मन में निश्चय करते थे कि हम किसी की बुराई नहीं देखेंगे।

सचमुच हम देखें तो जो सामने वाला व्यक्ति अपनी छोटी या बड़ी बुराई छोड़ रहा है, उसको हम ले रहे हैं– यह ठीक नहीं है, युक्तियुक्त नहीं है। हम अपने को बदले। देखो, आप रास्ते में चल रहे हैं, आपके सामने एक बड़ा पत्थर आ गया। आप क्या करेंगे? पत्थर को हटाने लगेंगे? नहीं ना! किनारा करेंगे ना! साइड से निकल जायेंगे ना! इसमें भी ऐसा ही करो ना! समझो, आपको आगे बढ़ने में एक विघ्न आया माना बड़ा पत्थर सामने आ गया। तब आप किनारा करेंगे या पत्थर तोड़ने लगेंगे? ऐसे हमको भी किनारा करना पड़ेगा ना! हम अपने को बदलें, उसको क्यों देखें? वो हमें बचायेगा क्या, हमारा साथ देगा क्या? हमें बचाने वाला, साथ देने वाला बाबा ही है ना! इसीलिए बाबा समान बनना माना पूरा निश्चयबुद्धि। कोई में भी संशय नहीं। चौथा, अपने में भी पूरा निश्चय। अपने में कभी संशय नहीं आना चाहिए कि पता नहीं मैं मंज़िल तक पहुँच पाऊँगा या नहीं, मैं देवता बन पाऊँगा या नहीं। पता नहीं मेरे में ताकत होगी या नहीं! यह परीक्षा बहुत बड़ी है, मैं पास कर सकूँगा या नहीं। यह अपने में संशय है। अपने में भी पूरा निश्चय चाहिए। पहले ही मैंने बताया है कि चारों बातों में निश्चय चाहिए, बाबा में, अपने में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में। हरेक नम्बरवार है। वो अपना रास्ता पकड़ रहा है और हम अपना रास्ता पकड़ें। अगर आप में ताकत है तो उसको शुभ-भावना और शुभ-कामना का सहयोग दो। बाकी किसी के प्रति घृणा तो नहीं रखो। घृणा से नुकसान किसका होगा? हमारा ही होगा ना! अगर मैंने किसी के प्रति घृणा रखी तो क्या मेरा योग लगेगा? जिससे घृणा है, वही सूरत, वही शक्ल योग के समय सामने आयेगी, बाबा नहीं आयेगा। इसीलिए 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'– यही ब्रह्मा बाबा की भी विशेषता थी।

जो चारों रूप से ब्रह्मा बाबा समान पक्के निश्चयबुद्धि होंगे, वे कभी हिल नहीं सकते चाहे हिमालय से भी बड़ी कोई परीक्षा आ जाये। आपके लिए हिमालय जैसा पहाड़ भी छोटा-सा रोड़ा हो जायेगा। क्यों? आपने कभी प्लैन में बैठ नीचे देखा है! ऊपर प्लैन में बैठकर नीचे देखते हैं तो नीचे की चीज़ क्या लगती है? छोटी लगती है ना! दिल्ली को ऊपर से देखो तो दिल्ली कितनी छोटी दिखायी पड़ती है! पैदल जाओ तो वहाँ की एक-एक गली कितनी बड़ी-बड़ी है! नीचे से वो चीज़ बड़ी दिखायी पड़ेगी और ऊपर से उसी चीज़ को देखते हैं तो बहुत छोटी दिखायी पड़ेगी। जब आपके सामने बड़े से बड़ा पेपर आये, परीक्षा आये तो आप ऊँचे ते ऊँचे परमधाम में बाबा के साथ बैठ जाओ। तो ये नीचे की चीज़ें आप को क्या दिखायी देंगी? मरी हुई चींटी के समान। कई भाई-बहनें मुझे कहते हैं, दादी, पहले जो पेपर था वो छोटा था, आज जो पेपर आया था वो बहुत बड़ा था। आपको पता नहीं, प्रवृत्ति में बहुत बड़े-बड़े पेपर आते हैं। आपको अनुभव नहीं है, आप तो ज्ञान में जल्दी आ गयीं ना! इस प्रकार हमको ही ज्ञान देते हैं, याद दिलाते हैं। ऐसे भी कहते हैं कि आपने तो प्रवृत्ति की ज़िम्मेवारियाँ संभाली ही नहीं हैं ना! संभालने वालों को पता होता है। मैं हँसकर उनसे कहती हूँ, भाई, एक बात बताओ, कोई आपसे कहे कि कुएँ में गिरने से क्या होता है, हमें पता नहीं है तो क्या आप उससे कहेंगे कि कुएँ में गिरकर देखो? गिरकर देखकर ही अनुभव करना होता है क्या? नहीं ना, जानकर, सुनकर भी तो अनुभवी बन सकते हैं। त्रेसठ जन्मों से तो हम प्रवृत्ति के अनुभव करते आये हैं ना! इस जन्म में दूसरों के अनुभव सुनकर ही समझ जाते हैं ना! आप तो एक ही प्रवृत्ति के अनुभव करते हैं, हम तो अनेक प्रवृत्तियों के अनुभवियों के अनुभव सुनकर अनुभवी बन जाते हैं। इसीलिए बाबा की मुख्य प्वाइंट जो है, 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति' यह पक्का करो। चारों निश्चयों के कोनों को पूरा टाइट करो ताकि जरा भी हमारा मन और बुद्धि हिले नहीं।

इसके लिए बाबा का स्लोगन है, सी नो इविल, टॉक नो इविल, डू नो इविल और थिंक नो इविल। गाँधी जी ने तो तीन बातें कहीं– बुरा न सुनो, बुरा न देखो और बुरा न बोलो। हमारे बाबा ने चौथा भी कहा है कि बुरा न सोचो। बाबा ने किसके लिए कहा है? ऐसी बातों के लिए कहा है कि दूसरों की बुराई न देखो, न वर्णन करो और न सोचो। व्यर्थ को देखते हुए देखो ही नहीं। यह हमारा काम ही नहीं है ना! ये सब साइड सीन हैं। समझो हम ट्रेन से आते हैं मधुबन। आते समय रास्ते में क्या नहीं आता? स्टेशनों के सामने देखो कितनी गंदगी, झुग्गी झोपड़ियाँ आदि रहती हैं! क्या हम बैठकर इन साइड सीनों के बारे में सोचते रहेंगे कि यह गंदगी क्यों है? ये लोग यहाँ क्यों रहते हैं? सरकार क्या करती है? ऐसे-ऐसे सोचते रहेंगे तो हमारी ट्रेन ही मिस हो जायेगी। ये साइड सीन हैं ना, कोई अच्छा होगा और कोई बुरा होगा। साइड सीन को रास्ते का नज़ारा समझकर हम चल पड़ते हैं ना! ऐसे ही कोई भी बात होती है, कोई पेपर होता है, आप अपनी मस्ती में फ़रिश्ता बनकर उड़ जाओ। बाबा फ़रिश्ता है ना! बाबा बिल्कुल हल्का रहा।

हमने तो देखा है ना बाबा को बचपन से लेकर। हम तो बाबा के साथ-साथ रहते थे। हमें ऐसा लगता है जैसे कि हमारा जन्म ही यहाँ हुआ है। बचपन से ही हमने ब्रह्मा बाबा को देखा है ना! कोई भी बात हो जाये, बेगरी लाइफ आयी लेकिन बाबा की शक्ल पर जरा-सी भी फिकर की रेखा दिखायी नहीं पड़ी। किसी को कोई फिकर होता है तो शक्ल बदल जाती है। ऐसा होता है ना! आप को कोई चिन्ता होती है तो चेहरा बदल जाता है ना! सामने वाले को पता पड़ता है कि यह चिन्ता में है। लेकिन ब्रह्मा बाबा के मस्तक में हमने कभी भी फिकर की रेखायें नहीं देखीं। क्या होगा, यह भी चिन्ता नहीं।

बेगरी लाइफ में एक बार बारह बजे भोजन की बेल (घंटी) बजनी थी लेकिन बारह बजे तक तो रोटी बनाने के लिए आटा भी नहीं था। उस समय 250-300 तो यज्ञवत्स होंगे ही। चार्जवाली बेचारी बहन कहे, बाबा, बारह बज रहा है, आटा नहीं, आटा कहाँ से आयेगा? आटा आयेगा, रोटी पकेगी उसके बाद बेल बजेगी। अभी समय तो हो गया लेकिन मैं बेल कैसे बजाऊँ? बाबा ने कहा, बच्ची, तुम क्यों फिकर कर रही हो? वो मेरे से पूछें ना कि बाबा, अभी तक बेल क्यों नहीं बजी? तुम चुपकर के बेफिकर बादशाह बनकर बैठ जाओ। देखो, हमको खिलाने वाला कौन है? ब्रह्मा भोजन किसका है? शिव बाबा का है ना! शिव बाबा ही हमें खिलाता है ना! आप सोचो, शिव बाबा कभी भूखा रहता है? सभी ब्राह्मण भोग लगाते हो ना? भले वो खाता नहीं लेकिन वासना तो लेता है ना! जब बाप भूखा नहीं रहता तो, बाप हम बच्चों को कैसे भूखा रख सकता है? बाबा ने यह मिसाल दिया।

साढ़े बारह बजे उस बहन ने आकर फिर बाबा से पूछा, बाबा साढ़े बारह बज गया, अभी क्या करें? बाबा ने कहा कि बच्चे पोस्ट आने दो। उन दिनों मानी-ऑर्डर आता था ढाई बजे, पोस्ट आती थी साढ़े बारह बजे। अगर पैसा आयेगा भी तो ढाई बजे आयेगा ना! साढ़े बारह बजे कैसे आयेगा पोस्ट में? लिफाफे में तो पैसे नहीं भेज सकते थे, यदि भेजा भी हो तो पोस्ट ऑफिस में उसको निकाल लेते थे। बाबा ने कहा, बच्ची, पोस्ट आने दो, तुम बेफिकर होकर बैठो। बाबा के मस्तक में उस समय जरा भी चिन्ता का चिह्न नहीं। आपके घर में 20-25 जनें हों और आटा नहीं हो, बच्चे भूख से कहें कि पिता जी, भूख लगी है, खाना खिलाओ, रोटी दो। आपकी शक्ल कैसी हो जायेगी? लेकिन ब्रह्मा बाबा निश्चिन्त। ढाई-तीन सौ लोग सामने साकार में बैठे हैं, घूम रहे हैं लेकिन बाबा बेफिकर! बाबा कहता है, खिलाने वाला तो वो है, वो कैसे अपने बच्चों को भूखा रखेगा! इतने नशे और निश्चय से बाबा कहता था। सचमुच यह हुआ कि पोस्ट आयी। उसमें एक गोपिका ने कागज में लपेट के पैसे भेजे थे, पचास रुपये निकले। साढ़े बारह बजे थे, बाबा ने आटा मँगाया, खाना बना और भोजन की बेल बजी। यह बात किसी को पता ही नहीं पड़ी कि पोस्ट द्वारा पैसे आने के बाद ही खाना बना। यह है गुड़ जाने और गुड़ की गोथरी जाने। बाकी हम लोगों को रोटी मिल गयी, अन्दर क्या हुआ हमें क्या पता! ऐसे आप समझ सकते हैं कि ब्रह्मा बाबा कितने बेफिकर थे! बेफिकर बादशाह तो बाबा को ही कहेंगे ना! ऐसा बेफिकर दुनिया में और कोई देखा है? बेफिकर रहने का कारण क्या रहा? निश्चयबुद्धि। बाबा को निश्चय था ना कि बाबा खुद भूखा नहीं रहता तो अपने बच्चों को कैसे भूखा रखेगा? तो 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति' हो गया ना! साक्षात्कार मूर्त हो गया ना! **हमको भी बाप समान बनना है तो ऐसे बेफिकर बादशाह बनना पड़ेगा और चारों बातों में पक्का निश्चयबुद्धि बन रहना पड़ेगा।** कोई भी बात में संशय नहीं होना चाहिए, न बाबा में, न अपने में, न ड्रामा में और न ब्राह्मण परिवार में। अगर आपको साक्षात्कार मूर्त बनना है तो ब्रह्मा बाप जैसा पक्का निश्चयबुद्धि, हर समय, हर परिस्थिति में हर्षित चेहरा, मुस्कराता चेहरा हो।